सूर्य नमस्कार पर मुम्बई आदेश अंतर्धार्मिक भेदभाव और मूलभूत नागरिक अधिकारों की कटौती है

डा. सय्यद ज़फ़र महमूद, अध्यक्ष, ज़कात फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया,
ZakatIndia.org

बृहन् मुम्बई नगर निगम (बीएमसी) द्वारा यह आदेश दिया गया है कि इसके 1200 स्कूलों के छात्रों द्वारा सूर्य नमस्कार किया जाना अनिवार्य है। बाम्बे उच्च न्यायालय के समक्ष इस आदेश को चुनौती देने वाली एक याचिका लंबित है जिसकी खंड पीठ ने, इस आदेश को लागू करने पर रोक लगाने से यह कहते हुए इंकार कर दिया है कि, “नाम पर न जाएं, यह केवल एक एक्सरसाइज़ है जो कि शरीर के लिए अच्छी है’| यहां तक कि प्रारम्भिक चरण में उच्च न्यायालय का कहना है कि, “इसमें क्या नुकसान है यदि बीएमसी ने सूर्य नमस्कार को अनिवार्य बना दिया है?” आइये इस न्यायिक सोच के गुण-दोषों का विश्लेषण करते हैं।

ऋग्वेद

2. इंटरनैशनल शिवानंद योग वेदांत सेन्टर्स, जो कि उत्तरकाशी, मदुरई, तिरूवन्तपुरम, अमरीका, यूरोप, चीन, जापान, अर्जेन्टीना, विएतनाम, कम्बोडिया तक व्याप्त है, की वेबसाइट sivananda.org के अनुसार, “हिन्दू पुराणों के अनुसार, सूर्य भगवान की पूजा स्वास्थ्य और अमर जीवन के संकेत के रूप में की जाती है। ऋग्वेद में यह घोषित किया गया है कि चल और अचल, दोनों वस्तुओं की आत्मा सूर्य है। सूर्य नमस्कार की उत्पत्ति सूर्य को दंडवत प्रणाम की श्रृंखला के रूप में हुई थी। परम्परागत रूप से, इसे सूर्योदय के समय, सूरज के सम्मुख मुंह करके किया जाता है। समय के साथ साथ, प्रत्येक बारह स्थितियों का एक मंत्र विकसित होता चला गया, जिसमें सूर्य के देवत्व के विभिन्न पहलुओं की उपासना की जाती है।”

पौराणिक उदगम

3. गुरू मुरूगन चिल्लायह ने अपने ग्रंथ “सूर्य नमस्कार: पौराणिक ओरिजन्स ऑफ वाल्मिक रामायण (http://www.silambam.asia/yoga_asana.html) में यह उल्लेख किया है कि, “आदित्य हृदयम" एक अन्य प्राचीन अभ्यास है, जिसमें सूर्य नमस्कार का रूपान्तरण शामिल है।

यह सूर्य को नमन करने की विधि है, जिसे ऋषि अगस्तय् ने राम चंद्र जी को रावण के साथ युद्ध से पहले सिखाया था। इसे रामायण के “युद्धकांड” सर्ग 107 में वर्णित किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया में सूर्य की प्रशंसा के लिए कुल 124 नामों का उल्लेख किया गया है।

4. पद संख्या 15-20 में सूर्य नमस्कार का वर्णन किया गया है। 15वें छंद के अनुसार: “वह तारों, नक्षत्रों और सम्पूर्ण तारामंडल का देवता है। वह इस ब्रह्माण्ड में प्रत्येक वस्तु का मूल है और यहां तक कि सबसे अधिक चमकने वाली चीजों का भी प्रकाश स्रोत यही है। बारह स्वरूपों में परिलक्षित सूर्य तुम्हें नमन है।”

12 आसन = सूर्य के 12 स्वरूप

5. सूर्य नमस्कार के बारह आसन सूर्य के बारह स्वरूपों को दर्शाते हैं।

प्रथम आसन: प्रणामासन

6. टाइम्स म्यूज़िक ने एक सूर्य नमस्कार ऐप बनाया है जिसकी प्रस्तावना में यह लिखा गया है कि ‘सूर्य नमस्कार को पूर्व दिशा की ओर, ऊषाकाल की वेला में उगते सूरज की दिशा की ओर मुख करके करना सर्वश्रेष्ठ है। healthandyoga.com में यह लिखा गया है कि सूर्य नमस्कार के प्रथम आसन को प्रणामासन कहा जाता है, यानि सूर्य को नमन, जिसके लिए आसन करने वाले को प्रार्थना की मुद्रा में खड़े होना पड़ता है, जबकि अमरीका और कनाडा की श्री कृष्ण प्रणामी सम्प्रदाय की वेबसाइट यानि pranami.org में यह लिखा गया है कि प्रणाम का अर्थ है, “मैं आपमें सर्वश्रेष्ठ प्रभु के समक्ष झुक कर नमन करता हूं।”

7. श्री श्री रवि शंकर की आर्ट ऑफ लिविंग वेबसाइट का कहना है कि, सूर्य नमस्कार, “ इस धरा पर जीवन को बनाए रखने के लिए सूर्य को धन्यवाद करने का अवसर प्रदान करता है।” इसके 'अष्टांग नमस्कार' नामक आसन की विडियो और तस्वीर में भक्त पेट के बल लेटता है जिसमें दो हाथ, दो पैर, दो घुटने, सीना और ठोड़ी जमीन को छूते हैं; इसका वर्णन, “शरीर के आठ अंगों या बिन्दुओं के साथ नमन” करने के रूप में किया गया है। इस सूर्य नमस्कार का आध्यात्मिक उद्देश्य यह है कि इसे करने वाले व्यक्ति को यह विश्वास होता है कि सूर्य द्वारा ही धरती पर जीवन को बनाए रखा जाता है।

8. pranayoga.co.in के अनुसार, " सूर्य नमस्कार उगते या ढलते सूरज की आराधना करने की प्राचीन काल से योगियों की परम्परा रही है। पूरे भारत में यह देखा जा सकता है कि हिन्दू पुरूष और महिलाएं ऊषाकाल के समय में सूर्य की ओर मुख करके खड़े होते हैं और उसकी आराधना करते हैं।

कुरान में इब्राहीम द्वारा सूर्य के देवत्व को अस्वीकार करने का स्पष्ट उल्लेख है

9. दूसरी ओर कुरान (6.75-80) में यह उल्लेख किया गया है कि पैग़म्बर इब्राहीम ने यह स्वीकार नहीं किया था कि सूर्य, चांद या तारे भगवान हैं बल्कि यह स्वीकार किया गया कि सूर्य सहित इस संपूर्ण सृष्टि का सृजनकर्ता निराकार और अदृश्य भगवान है। 16.12 में भगवान ने आगे यह स्पष्ट किया है कि, "उसने दिन और रात तथा सूरज और सितारों को मनुष्यों के आधीन बनाया है।"

कुरान: सूरज को लपेट दिया जाएगा और उसे अंधकारमय बना दिया जाएगा

10. 29.31 में कुरान में यह दोहराया गया है कि "क्या आप यह नहीं देखते कि भगवान रात को दिन में प्रवेश करवाता है और वह दिन को रात में प्रवेश करवाता है और भगवान ही सूर्य और चांद को एक विनिर्दिष्ट अवधि के लिए अपने पथ पर चलाता है।" भगवान द्वारा निर्धारित अवधि के लिए सूर्य अपने पथ पर चलता है (36.38), "ऐसा भगवान द्वारा आदेशित किए गए कानूनों के अनुसार होता है (7.54). 81.1 में भगवान ने मानवता के फैसले के दिन के बारे मे कहा है कि उस दिन 'सूर्य को लपेट दिया जाएगा और उसे अंधकारमय बना दिया जाएगा'।

कुरान में कहा गया है कि सूर्य को मनुष्य द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है

11. अनेक अन्य स्थानों पर भगवान ने कुरान में यह उल्लेख किया है कि इस्लाम धर्म की मूल भावना यह है कि सूरज, चांद, तारे और पूरी सृष्टि को भगवान ने मनुष्यों के अधीन बनाया है और यह कि ये सीमित जीवन के साथ भगवान की संरचनाएं हैं।

पैग़म्बर द्वारा आसमानों की यात्रा

12. कुरान में यह विस्तृत विवरण है कि किस प्रकार भगवान ने पैगम्बर मोहम्मद को आसमानों पर बुलाया था जहां पर भगवान ने उनसे बातचीत की थी और इस बातचीत को मुसलमानों द्वारा अपनी दैनिक पांच नमाज़ों में दोहराया जाता है। यह एक अन्य देवत्व कार्य है जिसके माध्यम से

यह संदेश दिया गया कि सूरज सहित पूरी सृष्टि में मानवता श्रेष्ठ है। इस भेंट के बाद, पैगम्बर वापस आए और उन्होंने एक सामान्य व्यक्ति का जीवन जीना शुरू किया। डा. सर इकबाल, जो “सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा” के रचयिता थे ने पैगम्बर की इस यात्रा का वर्णन निम्न प्रकार से किया है; इस यात्रा को अरबी में मेराज (यानी 'ऊंची उड़ान') के नाम से जाना जाता है:

सबक मिला है ये मेराज-ए-मुस्तफा से मुझे
कि आलम-ए-बशरिय्यत की ज़द में है गर्दूं।

[पैगम्बर की आसमानों की यात्रा से, मुझे यह मालूम हुआ है कि आसमान और पूरी सृष्टि मानव के नियंत्रण में हैं।]

नमाज़ भी शरीर के लिए लाभदायक एक्सरसाइज़ है

13. एक अन्य रूचिकर तथ्य यह है कि नमाज़ भी मानव शरीर के लिए एक उत्कृष्ट एक्सरसाइज़ है जिसमें योग के समान ही कुछ मुद्राएं शामिल हैं। इसकी शुरूआत, नमाज़ करने वाले व्यक्ति के सीधे खड़े होकर अपने दोनों हाथों को कानों तक ऊपर उठाने और फिर सीने और पेट के बीच में दोनों हाथों को रखने से होती है, जिसमें दाएं हाथ को बाएं हाथ के ऊपर रखा जाता है, जिसमें आंखों को नीचे रखा जाता है, और जिसमें दुनिया के अदृश्य सृजनकर्ता और वहनकर्ता के सम्मुख खड़े होने का अहसास किया जाता है, जिसकी प्रशंसा का गान किया जाता है और फिर कुरान के एक छोटे हिस्से का उच्चारण किया जाता है। फिर नब्बे डिग्री के कोण पर झुकते हुए, हाथों को घुटने पर रखते हुए, तीन बार यह उच्चारण किया जाता है कि, “मैं दुनिया के सृजनहार और वहनकर्ता की प्रशंसा करता हूं, जो महानतम है” और हाथों को नीचे रखते हुए फिर से खड़े होते हैं, और फिर धीरे धीरे दंडवत होते हैं और उसी प्रकार से फिर भगवान की प्रंशसा की जाती है और इस प्रकार की दूसरी प्रक्रिया के अंत में, घुटनों को 180 डिग्री पर मोड़ते हुए, पंजों, एड़ियों और घुटनों के बल बैठ कर पैग़म्बर के साथ भगवान के उपरोक्त उल्लिखित वार्तालाप को दोहराया जाता है तथा आम मनुष्यों के कल्याण की प्रार्थना की जाती है।

14. इस प्रकार हर रोज़ पांच बार शारीरिक एक्सरसाइज़ के कारण नमाज़ को भी किसी भी धर्म के धर्मावलम्बियों द्वारा अपनाया जा सकता है, और माननीय बाम्बे उच्च न्यायालय के अवलोकनों के अनुसार, किसी को नाम पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है और यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि नमाज़ भी मानव शरीर के लिए एक अच्छी एक्सरसाइज़ है।

कुरान में सूरज को भगवान की रचना कहा गया है

15. इस्लाम में सुबह की नमाज़ सूर्योदय के बाद और शाम की नमाज़ सूर्यास्त से पहले नहीं पढ़ी जा सकती है, और इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जाता है कि पूजा की वस्तु सूरज नहीं अपितु वह भगवान है जिसने सूरज की रचना की है।

16. विद्वत न्यायाधीश कृपया यह समझें कि सूर्य नमस्कार और नमाज़ में महत्वपूर्ण अंतर यह है कि सूर्य नमस्कार में सूर्य नमस्कार करने वाले व्यक्ति द्वारा सूर्य की पूजा की जाती है जबकि नमाज़ में सूरज के सृजनकर्ता और वहनकर्ता की पूजा की जाती है।

मूलभूत अधिकारों का राजकीय उल्लंघन

17. इसी प्रकार की स्थिति में, भारतीय संविधान की धाराओं 14,15 और 25 का स्पष्ट और सशक्त हस्तक्षेप होता है जिनके अनुसार, (क) राज्य द्वारा किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता से वंचित नहीं रखा जाएगा और सभी को कानून का समान संरक्षण प्रदान किया जाएगा; (ख) राज्य द्वारा किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा; और (ग) सभी व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की स्वतंत्रता के हकदार हैं और किसी भी धर्म को अपनाने, उसका अभ्यास करने और उसका प्रचार-प्रसार करने का अधिकार रखते हैं।

18. इस प्रकार, बृहन् मुम्बई नगर निगम का इसके द्वारा चलाए जाने वाले सभी स्कूलों में सूर्य नमस्कार को अनिवार्य किए जाने और उच्च न्यायालय द्वारा इस आदेश पर रोक लगाने से इंकार किए जाने से स्पष्ट रूप से इन मूलभूत संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन होता है। निगम द्वारा इस आदेश को जारी किया जाना और इसके प्रचालन पर रोक न लगाया जाना धर्म के आधार पर नागरिकों के एक वर्ग के साथ राजकीय भेदभाव है और इस से स्वतंत्र रूप से अपनी अंतरात्मा को स्वीकार करने और उसके अनुसार अभ्यास करने के मूलभूत नागरिक अधिकारों की कटौती होती है।

19. इसके अलावा, संविधान के अनुच्छेद 28 (झ) के में (i) सरकार द्वारा प्रचालित किसी भी शैक्षणिक संस्थान में धार्मिक निर्देश के उपबन्ध को प्रतिबंधित किया गया है और यह कहा गया है कि, (ii) सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त या सरकार से आर्थिक अनुदान प्राप्त करने वाले किसी भी शैक्षणिक संस्थान में पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को किसी भी धार्मिक विधा को सीखना अनिवार्य नहीं होगा, तथा (iii) इस प्रकार के संस्थान में आयोजित किसी भी धार्मिक पूजा पाठ में भाग लेना

या उससे सम्बद्ध किसी भी मूल या आधारभूत मान्यताओं में भाग लेना किसी व्यक्ति, या यदि वह व्यक्ति अवयस्क है, तो जब तक उसके अभिभावक उसके लिए सहमति नहीं दे देते, अनिवार्य नहीं होगा। बीएमसी के आदेश और साथ ही न्यायालय के आदेश भी अनुच्छेद 28 के उपबन्धों का भी उल्लंघन हैं।

उच्चतम न्यायालय अनुच्छेद 32 के अंतर्गत कृपया हस्तक्षेप करे

20. सुनिश्चित रूप से माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा इस महत्वपूर्ण विषय में हस्तक्षेप किया जाएगा, अनुच्छेद 32 के अंतर्गत कृपया हस्तक्षेप किया जाए, और धारा 14, 15 और 28 द्वारा प्रदत नागरिक अधिकारों का प्रवर्तन किया जाए ।